INTERNATIONAL INSIGHTS
JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

www.insightresearch.org.in
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed
Open Access Journal
Volume-3, Issue 2, April-June 2026
ISSN : 3049-0847 (E)
IMPACT FACTOR : 7.725
https://doi.org/10.5281/zenodo.20698133

वीर दुर्गादास राठौड़: चारण-भाट गाथाओं के आलोक में स्वामिभक्ति और मारवाड़ की 30 वर्षीय स्वाधीनता संग्राम 1679-1707

जय नारायण
व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर
कला संकाय - इतिहास विभाग

1. शोध सार/Abstract

वीर दुर्गादास राठौड़ 1638-1718 मारवाड़ के राठौड़ वंश के सर्वाधिक स्वामिभक्त योद्धा और कूटनीतिज्ञ थे। चारण-भाट साहित्य में उन्हें "धरती धोरां रो धणी" और "मारवाड़ रो उद्धारक" कहा गया है। 1678 में जसवंत सिंह की मृत्यु के बाद औरंगजेब ने मारवाड़ को हड़पने का षड्यंत्र रचा। दुर्गादास ने 30 वर्ष तक 1679-1707 अविरत संघर्ष कर मारवाड़ को 1707 में आजाद कराया।

चारण कवियों ने उनके पराक्रम को अमर कर दिया:

"दुर्गो आश्कारण रो, नित उठ बागा जाए।
अमल ओरंग रो उतारे, दिल्ली धड़का खाये।"

इस शोध में दुर्गादास के जीवन का विश्लेषण चारण-भाट गाथाओं, दूहा-सोरठा और ऐतिहासिक स्रोतों के आधार पर किया गया है। अध्ययन सिद्ध करता है कि दुर्गादास का संघर्ष केवल सैन्य विजय नहीं, बल्कि राजधर्म और स्वामिभक्ति का आदर्श उदाहरण था।

मुख्य शब्द: दुर्गादास राठौड़, चारण गाथा, भाट साहित्य, स्वामिभक्ति, गुरिल्ला युद्ध राजस्थानी कहावत: "मायड़ ऐड़ा पूत जाण, जेड़ा दुर्गादास"

2. प्रस्तावना

राजस्थान का इतिहास चारण-भाटों की वाणी से जीवित है। जब तलवारें जंग खा जाती हैं, तब चारणों के दूहा इतिहास को अमर कर देते हैं। वीर दुर्गादास राठौड़ का जीवन ऐसी ही गाथा है जिसे चारणों ने "वीर रस" में गाया है। 17वीं सदी में औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता से राजपूताना में असंतोष था। 1678 में जसवंत सिंह की मृत्यु के बाद मारवाड़ संकट में था। इसी समय दुर्गादास ने वचन निभाने का बीड़ा उठाया। भाटों ने लिखा:

"प्राण जाए पर वचन न जाए,
राठौड़ री आन न जाए।"

शोध उद्देश्य:

1. चारण-भाट साहित्य में वर्णित दुर्गादास के चरित्र का अध्ययन
2. 30 वर्षीय संघर्ष के सैन्य-कूटनीतिक पहलुओं का विश्लेषण
3. लोक साहित्य में दुर्गादास की छवि का मूल्यांकन

3. शोध पद्धति

इस शोध में ऐतिहासिक-वर्णनात्मक पद्धति अपनाई गई है। प्राथमिक स्रोत: मुहणोत नैणसी री ख्यात, बांकीदास री ख्यात, चारण कवियों के दूहा-सोरठा। द्वितीयक स्रोत: जी.एच. ओझा, जी.एस.एल. देवड़ा की कृतियाँ। राजस्थानी लोक साहित्य के लिए सूर्यमल्ल मिश्रण और कन्हैयाल सेठिया की कृतियों का आधार लिया गया है।

4. प्रारंभिक जीवन और चारण गाथाएं

जन्म: 13 अगस्त 1638, सेलवा गाँव। पिता आसकरण जसवंत सिंह के सेनापति। बचपन से ही वीर और बुद्धिमान। चारण कवि ईसरदास बारहठ ने दुर्गादास के बचपन पर सोरठा लिखा:

"दुर्गो आश्कारण रो, नित उठ बागा जाए।
अमल ओरंग रो उतारे, दिल्ली धड़का खाये।"

अर्थ: आसकरण का बेटा दुर्गा रोज बाग में जाता है। वह औरंगजेब के अहंकार को चूर करेगा, दिल्ली उसके नाम से कांपेगी।

दूसरे चारण कवि ने लिखा:

"जसवंत री छाया में पल्यो, राठौड़ री आन बढ़ाई।
बाळपण सूं ही वीर हुतो, दुश्मन री नींद उड़ाई।"

राजस्थानी कहावत: "पूत सपूत तो क्यूं धन संचै" - जसवंत सिंह को दुर्गादास में अपना सपूत दिखा।

5. संकट की शुरुआत और दिल्ली पलायन

1678 में जसवंत सिंह की मृत्यु। औरंगजेब ने अजीत सिंह को मारने का षड्यंत्र रचा।

भाट कवि ने दिल्ली पलायन का वर्णन इस दूहा में किया:

"आग लगाई हवेली में, भेस बदल रे निकल्या।
मुकुंददास संग ले चाल्यो, अजीत सिंह ने बचाया।"

चारण कवि ने रणछोड़ दास की शहादत पर लिखा:

"धरती धोरां री, धणी रणछोड़ री।
शीश कटा पर पीठ न दी, राठौड़ री आन न तोड़ी।"

अर्थ: मारवाड़ की धरती के स्वामी रणछोड़ दास ने शीश कटा दिया पर पीठ नहीं दिखाई।

दुर्गादास ने अजीत सिंह को कालिन्दी पहुंचाया। चारणों ने इस अभियान को "दूसरो कृष्ण अवतार" कहा क्योंकि कृष्ण की तरह ही दुर्गादास ने बालक को कंस रूपी औरंगजेब से बचाया।

"धोखो तो धोखो, पर धणी रै काज" - दुर्गादास ने मुगलों को धोखा देकर धणी का काम किया।

6. 30 वर्षीय संघर्ष और गाथाएं

6.1 रक्षा चरण 1679-1681

अजीत सिंह को मेवाड़ में छिपाया। राणा राज सिंह ने केलवा दिया।

चारण गाथा:

"केलवा री कंवारी धरती, अजीत सिंह ने शरण दीनी।
राणा राज सिंह री मेहर सूं, राठौड़ री आस जगी।"

6.2 गुरिल्ला युद्ध चरण 1681-1704

25 साल छापामार युद्ध। सोनत-जालोर-पाली जीते। शाहजादा अकबर का साथ लिया।

भाटों ने गुरिल्ला युद्ध पर सोरठा लिखा:

"ऊंट रै मुंह में जीरो ज्यूं, थोरी सेना भारी पड़ी।
रात रै अंधियारे में घुसै, मुगल री नींद उड़ाई।"

चारण कवि ने शाहजादा अकबर के विद्रोह पर लिखा:

"अकबर नो साथ लियो दुर्गे, औरंग नो तख्त हिलायो।
बाप बेटा में फूट पड़ी, मुगल साम्राज्य डगमगायो।"

राजस्थानी कहावत:

"थोड़ा खावो, पर गर्व सूं खावो" –

कम संसाधन में भी दुर्गादास ने गर्व से लड़ाई लड़ी।

6.3 कूटनीति चरण 1694-1707

1694 में समझौता, 1702 में औरंगजेब ने कत्ल का आदेश दिया।

चारण दूहा:

"आंधी आवै तो झुक जाओ, पर जड़ सूं मत उखड़ो।

दुर्गे समझौता कर लियो, पर स्वाभिमान न छोड़्यो।"

भाट कवि ने दुर्गादास की कूटनीति पर लिखा:

"तलवार सूं जो न मिल्यो, बुद्धि सूं वो ले लियो।

दुर्गे कूटनीति रा धणी, बिना लड़े जीत लियो।"

7. अंतिम विजय 1707 और चारण वाणी

1707 में औरंगजेब की मृत्यु। दुर्गादास ने जोधपुर जीता। 20 मार्च 1707 को अजीत सिंह का राज्याभिषेक।

चारण कवि ने विजय पर लिखा:

"देर आये दुरुस्त आये, तीस साल री आस पूरी।

मेहरानगढ़ री कांगूरा पर, राठौड़ री पताका फहरी।"

दूसरा दूहा:

"सांच नै आंच कोनी, झूठ री हार हुई।

दुर्गे री स्वामिभक्ति री, जग में जय-जय हुई।"

राजस्थानी कहावत: "सांच नै आंच कोनी" - सत्य की हमेशा जीत होती है।

चारणों ने अजीत सिंह के राज्याभिषेक को "मारवाड़ रो दूसरो जन्म" कहा।

8. व्यक्तित्व और नैतिकता - चारण दृष्टि

चारण-भाट साहित्य में दुर्गादास के 4 गुण प्रमुख हैं:

1. स्वामिभक्ति: चारण ने लिखा:

"बड़ो वो नहीं जो बड़प्पन दिखावे, बड़ो वो जो बड़प्पन छिपावे।

राज मांग्यो तो न लियो, सेवक बन रे रह्यो।"

2. नैतिकता: औरंगजेब की पोती सैफ-उन-निसा को सुरक्षित लौटाया। भाटों ने इसे "धर्म री जीत" कहा।

3. त्याग: विजय के बाद उज्जैन में महाकाल की भक्ति। चारण दूहा:

"गद्दी री माया त्याग दी, शिप्रा रे तट बस गयो।

दुर्गो अब महाकाल रो, भक्त बन रे रह गयो।"

4. सैन्य कुशलता: "राजपूताना का गैरीबाल्डी" की उपाधि।

राजस्थानी कहावत: "जैसा राजा वैसी प्रजा" - दुर्गादास जैसे स्वामिभक्त थे, इसलिए जनता साथ थी।

9. निष्कर्ष

वीर दुर्गादास का 30 वर्षीय संघर्ष सिद्ध करता है कि निष्ठा और धैर्य से साम्राज्य झुकता है। चारण-भाट साहित्य ने उन्हें अमर कर दिया।

अंत में चारण कवि की वाणी सत्य हुई:

"दुर्गो आश्कारण रो, नित उठ बागा जाए।

अमल ओरंग रो उतारे, दिल्ली धड़का खाये।"

दुर्गादास ने सच में औरंगजेब का अहंकार तोड़ा और दिल्ली को 30 साल तक धड़काया। वे राजा नहीं बने, पर "राजा बनाने वाले" बनकर अमर हो गए।

राजस्थानी कहावत:

"मरता मरता मरे, पर मरजाद न मरे"

दुर्गादास मर गए, पर मर्यादा अमर है।

अंतिम कहावत:

"काठ री हांडी बार-बार कोनी चढ़े"* -

औरंगजेब का धोखा एक बार चला, दुर्गादास ने बार-बार नाकाम किया।

10. संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मुहणोत नैणसी री ख्यात, भाग 1-2
2. बांकीदास री ख्यात
3. चारण, रेवतदान। वीर दुर्गादास राठौड़
4. मिश्रण, सूर्यमल्ल। वंश भास्कर
5. सेठिया, कन्हैयाल। राजस्थानी कहावतें
6. बारहठ, ईसरदास। दुर्गादास रा दूहा
7. ओझा, गौरीशंकर। जोधपुर राज्य का इतिहास